22

बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता (भाग-2)

हिन्दी भाषा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जिसे मानक भाषा भी माना गया है और जो हमारे अधिकांश स्कूलों में निर्देशों की भाषा है, उसमें पढ़ना-लिखना, विशेषकर लिखना सीखते वक्त बच्चों को क्या-क्या कठिनाइयाँ आती हैं और क्यों आती हैं - यह लेख इस बारे में चर्चा करता है। हिन्दी की वर्तनी व्यवस्था व इस व्यवस्था के नियमों की जटिलता के बारे में बताते हुए लेख यह कहता है कि बच्चों को इन नियमों को सीखने में समय तो लगेगा ही। लेख लिपि और वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों का विश्लेषण भी करता है और रेखांकित करता है कि सभी बच्चे एक तरह से ही लिखना सीखेंगे ऐसा हो ही नहीं सकता। साथ ही, यह माँग भी करता है कि वर्तनी व्यवस्था की जटिलता को समझते हुए बच्चों के साथ काम कैसे किया जा सकता है, अध्यापक को इस बारे में योजना बनानी चाहिए ।

हिन्दी की वर्तनी व्यवस्था भी बेहद जटिल है। ऐसी स्थिति में अध्यापक की क्या भूमिका होनी चाहिए?

देवनागरी के मानकीकरण की कोशिश लगातार होती रही है और इसके साथ-साथ देवनागरी लिपि सिखाने के तरीकों का भी मानकीकरण होता रहा है। आखिर हिन्दी राजभाषा है (ध्यान दें, संविधान के अनुसार यह 'राज्य भाषा' या 'राष्ट्र भाषा' नहीं है) और भारत सरकार ने समय-समय पर इसकी लिपि व वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए विविध स्तरों पर प्रयास किए हैं। 1966 में शिक्षा मंत्रालय ने 'मानक देवनागरी वर्णमाला' प्रकाशित की। 1967 में 'हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' पुस्तिका छपी और 1989 में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने 'देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' नामक पुस्तिका में 'मानक हिन्दी

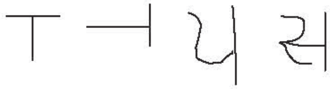
वर्णमाला, मानक हिन्दी वर्तनी, परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला तथा संख्यावाचक शब्दों' को एक साथ छापा। इसकी प्रस्तावना में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक ने पेज 3-4 पर लिखा है -

"प्रायः देखा गया है कि हिन्दी लिखते समय लोग देवनागरी वर्णमाला में प्रयुक्त वर्णों, शिरोरेखा और मात्राओं की लिखावट में एक निश्चित दिशा-पद्धति का निर्वाह नहीं करते। प्रारम्भिक शालाओं में इसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सिखाते समय तो इस प्रसंग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसलिए 'हिन्दी वर्णमाला: लेखन विधि' इसमें दी जा रही है।"

इस लेखन विधि में 'स' लिखना ऐसे सिखाया गया है



लेकिन उसको ऐसे लिखने में क्या आपत्ति हैः



या उन हज़ारों अन्य तरीकों से जिनसे 'स' लिखा जा सकता है? हर बच्चा अपनी इच्छानुसार अपना लिखने का तरीका बनाए इससे किसी को कोई आपत्ति क्यों होगी? अन्ततः वास्तव में होता तो ऐसा ही है। शायद ही कोई दो व्यक्ति हों जिनकी लिखावट बिलकुल एक ही जैसी हो। क्यों पठन-पाठन का इतना मूल्यवान समय हम ऐसी बेकार गतिविधियों में गँवाते हैं? क्या लिखावट में सरलता व मेहनत का कोई वैज्ञानिक पैमाना हो सकता है?

वर्तनी की कठिनाइयाँ

यह सच है कि हिन्दी की वर्णमाला व वर्तनी सीखना कोई आसान काम नहीं। वास्तव में यह बात हर भाषा को लिखने-पढ़ने के बारे में सच है। हिन्दी के विषय में अधिक कठिनाई इसलिए आती है कि लोग इस भाषा को बहुत वैज्ञानिक समझते हैं; एवं ऐसा मानते हैं कि यह भाषा बच्चे के लिए बहुत सरल होनी चाहिए। फिर जब बच्चे निरन्तर गलतियाँ करते हैं तो माँ-बाप व अध्यापक झुंझलाते हैं। हिन्दी लिखने का देवनागरी में जिस तरह मानकीकरण हुआ है उसकी वैज्ञानिकता व सरलता दोनों पर प्रश्न चिन्ह हैं। बच्चों को न सिर्फ व्यंजन व स्वर वर्ण सीखने होते हैं, बल्कि उन्हें निम्न मात्राएँ भी सीखनी होती हैं।

ा, ि, ी, ु, ू, े, ै, ो, ौ

और अक्सर साथ ही हल्-चिन्ह (्) और काफी जगह देवनागरी अंक।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

शायद देवनागरी में ही ऐसा होता है कि एक ही वर्ण के कई रूप होते हैं और उसे चारों तरफ से बदला जा सकता है। उदाहरण के लिए 'क' को देखिएः 'क', 'क्', 'का', 'कि', 'की', 'कु', 'कू', 'के', 'को', 'कं' आदि और फिर 'क्ष' में भी 'क्'। दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे हर तरफ कुछ न कुछ जोड़ने की सम्भावना। रोमन लिपि में ऐसा कुछ नहीं। दाईं तरफ को बराबर लिखते जाइए, बस। 'कि' में 'इ' की मात्रा लिखी पहले जाती है, पर बोली बाद में जाती है। अध्यापक अक्सर कहते हैं - देवनागरी सरल है, जैसा बोलो, वैसा लिखो। हिन्दी लिखने में यह बात सदा सार्थक नहीं होती। बच्चे बहुत-सी गलतियाँ मात्राओं के प्रयोग में करते हैं। सच बात यह है कि आज की हिन्दी में 'इ' और 'ई' व 'उ' और 'ऊ' में कोई विशेष अन्तर नहीं रहा है। इसलिए बच्चे वही लिखते हैं जो सुनते हैं। यह बात 'ऋ' व 'श' और 'ष' के प्रयोग से और भी स्पष्ट हो जाती है। संस्कृत में 'ऋ' एक स्वर-ध्वनि थी। हिन्दी वर्णमाला में इसे लिखा तो स्वरों में जाता है पर इसका उच्चारण है 'रि' यानी 'व्यंजन' (र्) + स्वर '(इ)'। (गुजरात, महाराष्ट्र व दक्षिण भारत में इसका उच्चारण 'रू' जैसा है।) जब 'ऋ' व्यंजनों के बाद आती है तो उच्चारण कई बार 'र' हो जाता है जैसे 'कृपा' या 'क्रपा', 'नृप' का 'न्रप' आदि। इसी प्रकार 'श' व 'ष' में किसी समय अन्तर रहा होगा, लेकिन अब नहीं है। अब यही कहकर समझाना पड़ता है कि 'पेट कटा' 'ष' लिखो', या षट्कोण वाला 'ष' - शक्कर वाला 'श' नहीं आदि। इस परिस्थिति में यदि बच्चेः

'ऋषि' को 'रिशि',

'विष' को 'विश',

'ऋतु' को 'रितु',

'कोष' को 'कोश'

आदि लिखें तो उनका क्या दोष? जहाँ उन्हें सही लिखने के लिए सराहना मिलनी चाहिए गलत लिखने के लिए डाँट पड़ती है।

जैसा बोलो वैसे लिखो?

इसी प्रकार, आपको अनेक ऐसे शब्द मिल जाएँगे जिनमें इ-ई, उ-ऊ, ए-ऐ या ओ-औ में अन्तर साफ नहीं है। क्या 'भक्ति' की 'इ' उतनी ही छोटी है जितनी की 'कि' या 'कवि' की या फिर लगभग उतनी ही लम्बी है जितनी की 'की' या 'घी' की। आप 'पेन' बोलते हैं या 'पैन'; 'भोंकना', 'भौंकना' या 'भूंकना'। उच्चरण वास्तव में अनेक हैं लेकिन लेखन मानकीकृत एकरूप। बच्चे गलती करें तो दोष उनका। वास्तव में सही लिपि सिखाने का नियम यह हो ही नहीं सकता कि 'जैसे बोलो, वैसे लिखो।' वर्तनी में सिखाने वाली बात ही यह कि, बोला जाएगा 'रिशि' लेकिन लिखना है 'ऋषि'। बच्चे को यह सिखाना है कि 'ऋतु', 'ऋषभ', 'ऋण', 'ऋषि' आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनमें 'रि' को 'ऋ' लिखना है। इसी प्रकार 'श' और 'ष' के बारे में। वर्तनी के जो नियम तर्कसंगत हैं वे तो बच्चा खुद ही आत्मसात कर लेगा। 'क्ष',

'त्र', 'ज्ञ' और 'श्र' के सम्बन्ध में बच्चों को यह समझने में कोई परेशानी नहीं होती कि इनमें दो-दो व्यंजन शामिल हैं। हाँ, यदि आप 'कक्षा' को 'कच्छा' बोलते हैं और बच्चा आपके बोलने पर वही लिखता है जो आप बोलते हैं तो आपको क्या करना चाहिए यह आप ही जानिए!

'ड़' और 'ढ़' हिन्दी वर्णमाला में कई बार अलग से लिखे जाते हैं। आजकल तो 'ट वर्ग' के साथ ही लिख देते हैं। इनकी भी अपनी कहानी है।

अधिकतर शब्दों के शुरू में 'ड' व 'ढ' ध्वनि का प्रयोग होता था व दो स्वरों के बीच 'ड़' व 'ढ़' यथा डर, डाल, खड्ड, ढाल, ढक्कन आदि; व स्वरों के मध्य में लड़का, घड़ा, बड़ा, पढ़ाई, चढ़ाई आदि। पर संस्कृत, फारसी व अँग्रेज़ी के अनेक शब्दों पर यह नियम नहीं जमा जैसे - निडर, डालडा, सोडा, रेडियो, झण्डा आदि। ध्वनि संरचना की दृष्टि से चारों ध्वनियाँ महत्वपूर्ण हैं। पैर में कहाँ बिन्दी लगेगी एवं कहाँ नहीं, इसका कोई नियम नहीं है। अगर आप 'रेड़ियो' बोलते हैं तो बच्चा शायद वही लिखेगा।

क़, ख़, ग़, ज़, और फ़

जिन ध्वनियों के लिए वर्णमाला में क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ रखे गए हैं उनकी कहानी तो और भी जटिल है। क्या आप क़यामत, क़साई, नक़द, नक़ल, अख़बार, ख़बर, ख़ाकी, ख़ानदानी, तारीख़, शराबख़ाना, काग़ज़, नग़मा, सुराग़, सौग़ात, ज़ख़्म, ज़मानत, ज़मींदार, फ़र्ज़, नज़ारा, फ़रवरी, फ़क़ीर, फ़सल, मुफ़्त, माफ़ी, लिफ़ाफ़ा आदि को हिन्दी के शब्द मानते हैं, और क्या आप चाहते हैं कि इनका उच्चारण भी संस्कृत से आए शब्दों जैसा शुद्ध हो?

साफ है इस बात का उत्तर इस पर निर्भर करेगा कि आपकी हिन्दी की परिभाषा क्या है? काफी प्रयत्न हुए हैं इन शब्दों को हिन्दी से निकाल फेंकने के। रही सही कसर छपाई की मजबूरियों ने निकाल दी। 'क़' और 'ग़' के बारे में तो मानकीकरण करने वाली संस्थाओं ने मान ही लिया है कि वे हिन्दी के 'क' और 'ग' में घुलमिल गए हैं - तो 'कसाई', 'कागज़' बोलिए और वैसा ही लिखिए। और "...'ख़' लगभग हिन्दी के 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो (ज़, फ़) धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं" (पृष्ठ 13, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1989)। आप अध्यापक हों या माता-पिता - आप ही निर्णय लें कि आप किस तरफ संघर्ष करना चाहते हैं।

चन्द्रबिन्दु की स्थिति

यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि कब कौन-सी ध्वनि किस भाषा की कहलाएगी और उसको लिखने के लिए कौन-सा वर्ण वर्णमाला में रखा जाएगा, यह निर्णय राजनैतिक है। खैर, छपाई की राजनीति ने काम काफी सरल कर दिया हैः 'ड़' और 'ढ़' को छोड़कर शायद ही आपको किसी वर्ण के नीचे बिन्दी दिखाई दे। चन्द्रबिन्दु भी आपको कहीं दिखाई नहीं देगा। और कई जगह तो पूर्ण-विराम की जगह आपको फुल-स्टॉप ही देखने को मिलेगा। 'रव' अब 'ख' लिखा जाता है, सोचिए क्यों? आखिर 'रव' के साथ भ्रम होने का प्रश्न आज ही तो न उठा होगा?

केवल भ्रम से बचने के लिए ही ध्वनि या वर्णों का लेखा-जोखा नहीं होता। आखिर

ताक	ताक़
हंस	हँस
खाना	ख़ाना
राज	राज़
बाग	बाग़
सजा	सज़ा
फन	फ़न

आदि में काफी अन्तर है। यदि चन्द्रबिन्दु (ँ) और 'क़', 'ख़', 'ज़', 'ग़', 'फ़' को निकाल दिया जाए तो शब्दों के अर्थ में भ्रम की काफी गुंजाइश बन जाती है।

"किन्तु जहाँ चन्द्रबिन्दु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चन्द्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु का प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चन्द्रबिन्दु के स्थान पर बिन्दु के प्रयोग की छूट दी जा सकती है।" (पेज 13, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1989)

अँग्रेज़ी के शब्द सही लिखने के लिए वर्णमाला में कुछ जोड़ना भी पड़े तो चलेगा। चन्द्रबिन्दु तो हटा दिया, लेकिन वृतमुखी (ॅ) जोड़ दिया यथा, हॉल, डॉक्टर, कॉलिज आदि।

वर्तनी के दोहरे प्रचलन

बड़ी ही जटिल व्यवस्था है वर्तनी के नियमों की। संयुक्त-वर्ण कैसे लिखे जाएँगे; हलन्त का क्या औचित्य है? 'श्रीमान्', 'महान्' लिखें या 'श्रीमान', 'महान' या दोनों ही चलने दें। 'र' को आपने 'ऋ' व 'श्र' में देखा।

पाँच-छः साल के बच्चे को जो हिन्दी की लिपि सीख रहा है और भी कई समस्याएँ सुलझानी पड़ती हैं। स्वरों का रूप कहाँ 'आ', 'इ', 'ई' आदि होगा और कहाँ इन्हें मात्राओं से दिखाया जाएगा; 'गयी' सही है या 'गई' या दोनों; 'द्वितीय' सही है या 'द्वीतीय' या 'द्‌वितीय'; 'कुत्ता' सही है या 'कुत्‌ता' या 'कुत्ता'। विभक्ति-चिन्ह सर्वनाम के साथ लिखें या नहीं - 'आपके लिए' या 'आप के लिए'। 'ऐ' और 'औ' का क्या-क्या उच्चारण हो सकता है - 'कैसा', 'गवैया', 'और', 'कौवा'।

वर्तनी की जटिलता के कुछ और उदाहरण देखिएः

रम

मर

आरती

क्रम, भ्रम, द्रव्य, ग्राम

ट्रक, ट्रेन, ड्रम, ड्रामा

गर्म, धर्म, शर्म, कर्म

क्या 'रम' का 'र' वही है जो 'मर या आरती' में है? हर बच्चा 'जानता' है कि 'मर' व 'आरती' का 'र' स्वर रहित है; 'रम' के 'र' में 'अ' है। देखने व लिखने में लेकिन बराबर।

'र' पैर में या सिर पर तब जाता है जब संयुक्त व्यंजनों का हिस्सा होता है। संयुक्त व्यंजनों में यदि पहला 'र' है तो सिर पर जैसे - 'गर्म'; यदि दूसरा 'र' है तो पैर में जैसे - 'क्रम'; और यदि दूसरा 'ट' वर्ग के साथ है तो रूप ऐसा जैसा कि 'ट्रक' में है। आखिर यह जटिल नियम कौन जानता है; कौन बच्चों को सिखाता है? लेकिन हर बच्चा स्वयं लिखित सामग्री से यह नियम बना लेता है।

'क्रम' व 'कर्म' में बच्चे गलती नहीं करते। शायद ही कोई बच्चा हो जो 'ग्राम' को 'गार्म' लिखे। हाँ, यह तो हम लोग खुद ही नहीं जानते कि 'गरदन' सही है या 'गर्दन'; 'गरम' या 'गर्म'; 'सरदी' या 'सर्दी'; 'कुरसी' या 'कुर्सी'; 'बरतन' या 'बर्तन'।

सचमुच बहुत ही जटिल है वर्तनी व्यवस्था। कहीं-कहीं तो बहुत साफ नियम हैं। चेतन स्तर पर अक्सर ये नियम हमें मालूम नहीं होते। लेकिन हर हिन्दी पढ़ने-लिखने वाला व्यक्ति ये नियम स्वयं अलग-अलग रास्तों से बना लेता है। लेकिन बहुत कुछ ऐसा भी है जिसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं। दोनों परिस्थितियों में बच्चे को खुद सीखना है और उसमें सीखने की क्षमता है। ध्वनि-व्यवस्था लिपि-व्यवस्था से कहीं अधिक जटिल है। और वहाँ तो कुछ ऐसा भी नहीं जो स्थाई हो। स्वाभाविक प्रश्न है - अध्यापक का क्या रोल है? यही कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समझें, बच्चे की क्षमता को समझें और बच्चे को अधिक से अधिक रोचक सामग्री दें।

स्रोत

- रमाकान्त अग्निहोत्री, 1999, "बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता-2", *शैक्षिक संदर्भ*, पृ 39-45, भोपाल: एकलव्य।

सन्दर्भ

- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1989, *देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण*, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
- भोलानाथ तिवारी, 1996, *मानक हिन्दी का स्वरूप*, दिल्ली: प्रभाव प्रकाशन।
- लक्ष्मी नारायण शर्मा, 1976, *देवनागरी लेखन तथा वर्तनी व्यवस्था*, आगरा: केन्द्रीय हिन्दी संस्थान।